खंड-1—अपठित-बोध (IX-X)

1. अपठित गद्यांश

अभ्यास-कार्य

● **निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

पृष्ठ संख्या—41

गद्यांश-1

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर—

1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर—

1. कृषि वैज्ञानिक उन्नत किस्म के नए बीज तथा अधिक अन्न पैदा करने वाली फसलों के उत्पादन हेतु नई-नई तकनीकों के अनुसंधान में लीन हैं। कृषि वैज्ञानिकों के सद्प्रयासों से उत्तम बीज, रासायनिक खादों तथा कृषि के अत्याधुनिक औजारों की मदद से खेती-बाड़ी के काम में बढ़ोतरी हुई है।
2. आज का किसान कृषि वैज्ञानिकों के कारण उत्तम बीजों, रासायनिक खादों तथा खेती में प्रयुक्त आधुनिक औजारों का प्रयोग कर रहा है। इस प्रकार भारतीय किसान खाद्य समस्या के समाधान के प्रति कटिबद्ध है।
3. भारत सरकार का सदा यही प्रयत्न रहा है कि खेती को उद्योगों की भाँति प्राथमिकता प्रदान की जाए। इस क्रम में सरकार किसानों को खेती के काम में बढ़ावा देने के लिए सस्ते ब्याज दर पर ऋण प्रदान कर रही है। साथ-साथ कृषि पैदावार के मूल्य में अभिवृद्धि हेतु इनसे संबंधित उद्योगों को स्थापित करने पर बल दे रही है। इनके अतिरिक्त अन्य सुविधाएँ भी सरकार किसानों को देने की कोशिश कर रही है।
4. लेखक ने किसान को राष्ट्रप्रेमी कहा है, क्योंकि किसान अन्न उपजाकर सारे राष्ट्र का पालन करता है। वह हम सबका अन्नदाता या पालनहार है।
5. क् + ऋ + ष् + इ
6. **शीर्षक—**भारतीय किसान—सच्चा देशप्रेमी।

पृष्ठ संख्या–41

गद्यांश-2

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. वृक्षों के हरे होने का कारण लेखक को यह समझ में आया कि ऊपर से हरे-भरे दिखने वाले वृक्षों की जड़ें ज़मीन में गहराई तक समाई हैं और उन्हें वहाँ से पानी मिल रहा है। इस तरह अंदर से पानी और ऊपर से धूप, दोनों की कृपा से वृक्षों को सुंदर हरा रंग मिला है।
2. अंदर से भक्ति का पानी और बाहर से तपश्चर्या की धूप ग्रहण कर हम भी पेड़ों की तरह हरे-भरे हो सकते हैं।
3. जो लोग ज्ञान की दृष्टि से परिश्रम को नहीं देखते, इसलिए उसमें तकलीफ़ महसूस करते हैं, ऐसे लोगों को आरोग्य और ज्ञान कभी नहीं मिलने वाला।
4. हमें दुनिया की हर एक चीज से शिक्षा मिलती है। लेखक को हरे-भरे वृक्षों को देखकर यह शिक्षा मिली कि मनुष्य को भी ऊपर से तपश्चर्या की धूप तथा अंदर से भक्ति का पानी मिले तो उसका जीवन हरा-भरा हो जाए।
5. सरल वाक्य
6. **शीर्षक**–शिक्षा के स्रोत

पृष्ठ संख्या–42

गद्यांश-3

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. सूरदास ने अपने आराध्य श्री कृष्ण को, जबकि गोस्वामी तुलसीदास ने श्री राम को अपनी कविता का आधार बनाया है। कबीर निर्गुण भक्ति-भावना के कवि थे।
2. महात्मा सूरदास की कविता में जो सरसता, लालित्य तथा रस है, वह अन्य किसी कवि की कविता में नहीं मिलता।

3. महात्मा सूरदास जी का जन्म सन 1478 के लगभग माना जाता है। इनका जन्म-स्थान 'रुनकता' (मथुरा-आगरा मार्ग पर स्थित) है। कुछ लोगों की मान्यता है कि ये दिल्ली के समीपवर्ती गाँव 'सीही' में पैदा हुए थे। सूरदास जी सारस्वत ब्राह्मण थे। इनके पिता जी का नाम रामदास था। इनके पदों से प्रभावित होकर महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने इन्हें दीक्षा दी थी।

4. महाकवि सूरदास, तुलसीदास तथा कबीरदास जी द्वारा रचित लोकप्रिय कविताएँ, जो आज भी जनसाधारण के कंठ का हार बनी हुई हैं, के कारण भक्तिकाल को स्वर्णयुग माना जाता है।

5. सूरसागर

6. **शीर्षक**–महाकवि सूरदास

पृष्ठ संख्या–43

गद्यांश-4

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. राष्ट्रीय स्तर पर आत्मनिर्भरता का अर्थ है–निज, समाज तथा राष्ट्र द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करना। जो लोग दूसरों का मुँह नहीं ताकते वे आत्मनिर्भर होते हैं।

2. 'स्वावलंबन जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है' कथन से लेखक का आशय है कि सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वावलंबी अवश्य होना चाहिए। स्वावलंबन व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के लिए सर्वांगीण सफलता प्राप्ति का महामंत्र है। स्वावलंबन वीरों तथा कर्मयोगियों की सर्वांगीण उन्नति का आधार है।

3. प्रकृति में स्वावलंबन के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। पेड़-पौधों व पशु-पक्षियों में तो स्वावलंबन कूट-कूटकर भरा है। वे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। सूर्य से प्रकाश, धरती से जल व अन्य खनिज ग्रहण कर पौधे स्वतः बढ़ते जाते हैं। चींटी जैसा नन्हा-सा जीव भी स्वावलंबन का महत्व समझता है।

4. जो मनुष्य दूसरों के मुँह नहीं ताकते, उन्हें आत्मनिर्भर कहा जाता है। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के द्‌वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करना तथा इनमें आत्मविश्वास की भावना का संचार करना आत्मनिर्भरता है।
5. **शीर्षक**–स्वावलंबन : सफलता की पहली सीढ़ी या आत्मनिर्भरता।
6. दूसरों के मुँह नहीं ताकने वाले ही आत्मनिर्भर होते हैं।

पृष्ठ संख्या–44

गद्‌यांश-5

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. आदिमानव का जन्म व उसकी सभ्यता-संस्कृति का विकास वनों में ही हुआ था। उनकी खाद्‌य-सामग्री और आवास की समस्या भी वनों ने ही सुलझाई थी। मानव और अन्य वन्य जीव-जंतुओं के जीवन की रक्षा में भी वनों का हाथ रहा है।
2. हमारे ग्रंथ, उपनिषद और आरण्यक आदि वनों में रचे गए। महाकवि वाल्मीकि द्‌वारा रचित ग्रंथ रामायण भी तपोवन में ही रूपाकर पा सका था। हमें वनों से ही औषधियाँ मिलती हैं। कागज़ बनाने तथा मकान के लिए लकड़ी वनों से ही प्राप्त होती है।
3. सिंचाई और पेयजल की समस्या का समाधान वनों के संरक्षण से ही संभव है। वन हैं तो नदियाँ भी अपने भीतर जल की अमृत धारा सँजोकर प्रवाहित कर रही हैं। वन समाप्त होने से धरती बंजर व रेगिस्तान बन जाएगी।
4. सिंचाई और पेयजल की समस्या का समाधान वनों के संरक्षण से ही संभव है।
5. पेड़-पौधे वर्षा का कारण बनकर पर्यावरण की रक्षा करते हैं और साथ-साथ इनमें कार्बन डाइऑक्साइड को शोषित करने की शक्ति भी होती है।
6. **शीर्षक**–वन-प्रकृति की अमूल्य संपदा

पृष्ठ संख्या–45

गद्यांश-6

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. एक आदर्श नागरिक हमेशा परोपकार करने के लिए उद्यत रहता है। उससे किसी दूसरे व्यक्ति का हित करने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सामाजिक संकट उत्पन्न होने की स्थिति में वह निजी मंगल की बात विस्मृत कर समाज के लिए सब कुछ समर्पित करने को तैयार हो जाता है।
2. सामाजिक प्रगति एवं विकास के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य निजी स्वार्थ को सर्वथा भूल जाए तथा अपने समाज की सेवा एवं मंगल कार्य में प्रवृत्त हो जाए।
3. असहायों और दीन-निर्धनों के प्रति करुणा की भावना, दुखी लोगों के प्रति सहानुभूति का भाव तथा सहयोग एवं कर्तव्यपालन का आचरण आदर्श नागरिक के महत्व को व्यक्त करनेवाले गुण हैं।
4. लेखक ने मानव को एक सामाजिक प्राणी बताया है। समाज में रहकर मानव अपने व्यक्तित्व की सर्वतोमुखी उन्नति कर सकता है।
5. **शीर्षक**–आदर्श नागरिक
6. **मूल शब्द**–समाज, **प्रत्यय**–इक

पृष्ठ संख्या–46

गद्यांश-7

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. साहित्य समाज के लिए प्रकाश स्तंभ का कार्य करता है। जब साहित्य का आलोक-पुंज सूर्य की भाँति समाज के समस्त विकारों का हरण करता है, तभी वह सत् साहित्य कहलाने का अधिकारी होता है।

2. साहित्य मानव-जीवन को वाणी देने के साथ समाज का पथ-प्रदर्शन करता है। साहित्य मानव-जीवन के अतीत का ज्ञान कराता है, वर्तमान का यथार्थ चित्रण करता है और भविष्य के निर्माण की प्रेरणा भी देता है।
3. मानव सत् साहित्य पढ़कर स्वयं तथा समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसर करा सकता है। प्रत्येक आनेवाला समाज और युग इससे प्रेरणा ग्रहण कर उन्नति करता है। सत् साहित्य ही हमें मनुष्य बनाए रखता है।
4. किसी समाज का साहित्य जब क्षीण होने लगता है, तो वह समाज रसातल में पहुँच जाता है। साहित्य ही हमें मनुष्य की कोटि में बनाए रखता है।
5. **शीर्षक**–साहित्य और समाज
6. संज्ञा पदबंध

पृष्ठ संख्या–47

गद्यांश-8

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. धरती पर वृक्षों को ऑक्सीजन का मुख्य स्रोत कहा गया है। सभी वृक्ष दिन के समय ऑक्सीजन छोड़ते हैं तथा मनुष्य के लिए हानिकारक कार्बन डाइऑक्साइड गैस साँस के रूप में लेते हैं।
2. पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश तथा कार्बन डाइऑक्साइड गैस की उपस्थिति में अपना भोजन बनाते हैं। इस प्रकार से ये पर्यावरण के लिए नुकसानदेह गैस कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण कर लेते हैं।
3. आँवला, हरड़, बहेड़ा, ऐलोवेरा, अर्जुन, अशोक, नीम, जामुन आदि जैसी प्रसिद्ध आयुर्वेदिक औषधियाँ पेड़-पौधों से ही प्राप्त होती हैं। इसके अलावा इनसे फल, सब्ज़ियाँ, अन्न आदि भी हमें मिलते हैं, जो हमारे भोजन के प्रमुख अंग हैं।
4. धरती पर जीवन के लिए अत्यंत ज़रूरी तत्वों में से जल और ऑक्सीजन प्रमुख हैं। हमारे जीवन का आधारभूत तत्व ऑक्सीजन पेड़-पौधे ही हमें प्रदान करते हैं।
5. पेड़ और पौधे–द्वंद्व समास
6. **शीर्षक**–पेड़-पौधों का महत्व

गद्यांश-9

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. भारत के किस भाग में हिंदी का विरोध देखने को मिलता है?

   (क) पूर्वी भाग में

   (ख) पश्चिम भाग में

   (ग) उत्तरी भाग में

   (घ) दक्षिणी भाग में

उत्तर 1. (घ)

2. (घ) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कतिपय स्वार्थी और प्रभावशाली लोगों ने सरकार में बैठे नेताओं के माध्यम से सदैव अपने स्वार्थों की खातिर राष्ट्रभाषा को उसका जायज़ हक पाने से रोका है।
2. हिंदी का प्रमुख विरोध दक्षिण भारत में ही अब तक अधिक हुआ है। तमिलनाडु आदि राज्य अपनी प्रादेशिक भाषाओं और अंग्रेज़ी में ही कामकाज करते हैं, परंतु जब हिंदी की बात आती है, तो वे हिंदी के मार्ग में रुकावट डालते हैं।
3. दक्षिण भारत में भी हिंदी सीखने वालों की कमी नहीं है तथा वे इस बात के लिए पूरी तरह तैयार हैं कि यदि कभी हिंदी का बोलबाला हो जाए और वह राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो जाए, तो भी अखिल भारतीय सेवाओं में उन्हीं का वर्चस्व कायम रह सके।
4. इंग्लैंड सहित केवल 6 देशों की ही सरकारी भाषा अंग्रेज़ी है, जो विगत अंग्रेज़ी साम्राज्य के अंतर्गत रहे थे। जिन राष्ट्रों की सरकारी भाषा अंग्रेज़ी नहीं है, वे अपनी भाषाओं के बल पर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं।
5. **संज्ञा शब्द**–प्रदेश
6. **शीर्षक**–हिंदी के विकास में बाधक तत्व

पृष्ठ संख्या–48

गद्यांश-10

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. 'क्रेश' फ़िल्म के निर्देशक पॉल हैगिस हैं। इस फ़िल्म की विशेषता इसकी कहानी है। 'क्रेश' कई कहानियों का संगम है जो शुरुआत में एक-दूसरे से भिन्न लगती हैं, पर फ़िल्म के अंत तक सबका आपस में साफ़ संबंध प्रतीत होने लगता है।
2. 'क्रेश' फ़िल्म रेसिज़्म का दंश झेलते अमेरिकी समाज की कहानी है। गोरे, काले और मूल रूप से दूसरे देशों से अमेरिका में आकर बसे पात्रों के तनावों से दो-चार होते जीवन को समेटे हुए फ़िल्म आगे चलती है। क्या गोरे और क्या काले, सब पात्र अपने ढंग से रेसिस्ट हैं।
3. इस फ़िल्म में काले और गोरे चरित्र एक-दूसरे के प्रति पूर्वाग्रहों से भरे हुए हैं और अगर वे किसी पद पर हैं तो उसका फ़ायदा दूसरे को प्रताड़ित करने में उठाते हैं।
4. 'क्रेश' फ़िल्म को ऑस्कर पुरस्कार मिला है। चूँकि यह फ़िल्म रेसिज़्म का दंश झेलते अमेरिकी समाज का बिलकुल सटीक एवं जीवंत खाका खींचती है, इसलिए इसे ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
5. ऑस्कर विजेता फ़िल्म 'क्रेश' कई परिस्थितियों में उत्पन्न हुई कहानियों का संगम है। अत: इस फ़िल्म के पात्रों के जीवन तनावपूर्ण हैं। परिणामस्वरूप इन्हें किसी-न-किसी प्रकार की बुराई को सहने के लिए बाध्य होना पड़ता है।
6. **शीर्षक–**ऑस्कर विजेता फ़िल्म-क्रेश

पृष्ठ संख्या–49

गद्यांश-11

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कल–कारखानों का दूषित जल नदी–नालों में मिलकर जल–प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय यही दूषित जल अन्य सभी नाली–नालों में घुल–मिल जाता है, जिससे अनेक बीमारियाँ पैदा होती हैं। इतना ही नहीं गंदे जल के कारण कई बीमारियाँ फसलों के माध्यम से मनुष्य के शरीर में पहुँचकर उसके लिए जानलेवा साबित होती हैं।
2. कल–कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर–गाड़ियों की चिल्ल–पों, लाउडस्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनियाँ आदि ध्वनि–प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।
3. प्रदूषण को कारण मानव जीवन खतरे में पड़ गया है। मनुष्य का साँस लेना दूभर हो गया है। इसके कारण व्यक्ति के शरीर में कई प्रकार की बीमारियों ने अपना घर बना लिया है।
4. प्रदूषण से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए–
   (*i*) अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएँ।
   (*ii*) सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों।
   (*iii*) आबादी वाले क्षेत्र खुले, हवादार तथा हरियाली से ओतप्रोत हों।
   (*iv*) कल–कारखानों को आबादी से दूर रखा जाए तथा उनसे निकले प्रदूषित पदार्थों को नष्ट करने के उपाय किए जाएँ।
5. प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं; जैसे– वायु–प्रदूषण, जल–प्रदूषण, ध्वनि–प्रदूषण आदि।
6. **शीर्षक:** प्रदूषण की समस्या

पृष्ठ संख्या–50

गद्यांश–12

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. 'ख' और 'ग' सही हैं। 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. सभी कथन सही हैं।

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. विज्ञान के कारण मनुष्य का जीवन पहले से अधिक आरामदायक हो गया है। इसके एक प्रमुख आविष्कार मोबाइल फोन के द्वारा मनुष्य किसी भी

समय तथा कहीं भी अपने लोगों से बातें कर सकता है, मैसेज भेज सकता है। इतना ही नहीं द्रुतगति के वाहनों के द्‌वारा वह सुविधाजनक तरीके से महीनों की यात्रा दिनों में तथा दिनों की यात्रा चंद घंटों में पूरी करने लगा है। साथ ही चिकित्सा के क्षेत्र में असाध्य बीमारियों का इलाज मामूली गोलियों से होने लगा है तथा कैंसर और एड्‌स जैसी बीमारियों के उन्मूलन के लिए चिकित्सा जगत प्रयासरत है।

2. इंटरनेट ने मनुष्य की जिंदगी को बदलकर रख दिया है। इसके द्‌वारा मनुष्य अपने सोचने में लगने वाले समय के बराबर समय में किसी को भी कहीं भी मैसेज सकता है या बातें कर सकता है। इसके कारण मनुष्य का जीवन पहले से अधिक आरामदायक हो गया है।
3. यातायात के साधनों ने मानव जीवन को सुगम बना दिया है। पहले जो यात्राएँ महीनों और दिनों में होती थीं, वे अब यातायात के द्रुतगामी तथा सुविधाजनक साधनों के कारण दिनों और घंटों में होने लगी है। साथ ही दिनों-दिन इन साधनों की गति और उपलब्धता में सुधार होता जा रहा है।
4. विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में कई प्रकार की सुविधाएँ जुटाई हैं। आज कई असाध्य बीमारियों का इलाज मामूली गोलियों से हो जाता है। चिकित्सक कैंसर, एड्‌स जैसी लाइलाज बीमारियों के उन्मूलन के लिए प्रयासरत हैं।
5. मनुष्य को मानवता की भलाई के लिए विज्ञान का लाभ उठाना चाहिए।
6. **शीर्षक** – विज्ञान के आविष्कार।

पृष्ठ संख्या–51

गद्‌यांश-13

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. प्रशासन, स्कूल, समाज, परिवार सभी जगह सब लोगों के अनुशासन में रहने, अपने कर्तव्यों का पालन करने तथा अपनी जिम्मेदारियों को समझने से कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी या अशांति नहीं होगी, इसलिए राष्ट्रीय

जीवन में अनुशासन जरूरी हैं। नियम तोड़ने से अनुशासनहीनता बढ़ती है तथा अव्यवस्था पैदा होती है।

2. व्यक्ति अनुशासन का पाठ बचपन से परिवार में रहकर सीखता है तथा विद्यालय जाने पर इस भावना का विकास होता है। अच्छी शिक्षा अनुशासन का पालन करना सिखाती है। सच्चा अनुशासन मनुष्य को पशु से ऊपर उठाकर वास्तव में मानव बनाता है।
3. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि विद्यार्थी को विद्यालय के नियमों पर चलना पड़ता है, शिक्षकों का आदेश मानना पड़ता है, उसके शारीरिक एवं मानसिक गुणों का विकास होता है। अतः भविष्य सुखमय बनाने के लिए उसका अनुशासित रहना जरूरी है।
4. सफलता प्राप्त करने के लिए अनुशासन में रहना इसलिए भी जरुरी है क्योंकि इससे कार्य करने में परेशानी नहीं होती। इसके अलावा कार्य करते समय भय, शंका एवं गलती होने का डर नहीं रहता है।
5. अनुशासन में रहकर कार्य करने से उस कार्य को करने में कोई परेशानी नहीं होती।
6. **शीर्षक**–अनुशासन का महत्व।

पृष्ठ संख्या–52

गद्यांश-14

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (घ) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. भगवान महावीर का बचपन का नाम वर्धमान था। बाल्यकाल से ही साहसी, तेजस्वी, ज्ञानपिपासु और अत्यंत बलशाली होने के कारण वे महावीर कहलाए।
2. माता-पिता की मृत्यु के बाद महावीर 30 वर्ष की युवावस्था में दीक्षा लेकर तपस्या के लिए निकल पड़े। घने वनों में ज्ञान की खोज करते हुए उन्होंने कठोर तपस्या की और वस्त्र एवं भिक्षा-पात्र तक का त्याग कर दिया।
3. भगवान महावीर सबको समान मानते थे तथा किसी को भी कोई दुख नहीं देना चाहते थे। उन्होंने अपनी इसी सोच पर आधारित एक नूतन विज्ञान 'परितृप्ति का विज्ञान' विश्व को दिया।

4. 'जिन' से जैन शब्द बना है। जो अपने को जीत लेता है, वह जैन है। इस प्रकार से, जो कामजयी है, तृष्णाजयी है, इंद्रीयजयी है, भेदजयी है, वही जैन है।
5. भगवान महावीर की दृष्टि में मात्र शरीर को कष्ट देना ही हिंसा नहीं है अपितु मन, वचन, कर्म से किसी को आहत करना भी हिंसा ही है।
6. **शीर्षक** – भगवान महावीर और जैन धर्म।

पृष्ठ संख्या–52

गद्यांश-15

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख) 6. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. अनुशासन विद्यार्थी की उन्नति का एकमात्र द्वार है। इसका विद्यार्थी के साथ गहरा संबंध है। यह समाज और राष्ट्र के लिए हितकारी है, क्योंकि इसी से समाज और उन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है।
2. आज विद्यार्थियों में अनुशासन का ह्रास होता दिखाई दे रहा है। छात्र बिना पढ़ाई-लिखाई के ही अगली कक्षा में पहुँच जाना चाहते हैं या फिर गलत तरीके से परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं। स्कूल-कॉलेजों में भी अनुशासनहीनता साफ़ नज़र आती है।
3. स्कूल-कॉलेजों में दिखाई देने वाली अनुशासनहीनता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–
   (*i*) दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली
   (*ii*) छात्रों के माता-पिता का कामकाजी होना
   (*iii*) छात्रों के माता-पिता और अध्यापकों में संप्रेषण का अभाव
4. शिक्षा-पद्धति के प्रत्येक पहलू में सुधार करके विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना जाग्रत की जा सकती है। छात्रों को अनुशासित रखने में शिक्षक एक अहम भूमिका निभा सकता है।
5. छात्रों की अनुशासनहीनता दूर करने में शिक्षक और अभिभावक एक अहम भूमिका निभा सकते हैं।
6. **शीर्षक–** विद्यार्थी और अनुशासन।

पृष्ठ संख्या–53

गद्यांश-16

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. लेखक को समाचार-पत्र के समाचारों से ऐसा लगता है कि देश में कोई ईमानदार रह ही नहीं गया है। हर कोई संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। कुछ करने पर लोग उसमें दोष खोजने लगते हैं। सारे गुणों को भुलाकर उसके दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने लगते हैं। यही सब देखकर लेखक ने ऐसा कहा है।
2. लेखक के अनुसार इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता, क्योंकि कुछ करने पर ही लोग काम में दोष खोजते हैं। काम नहीं करने पर लोग किस चीज में दोष ढूँढ़ेंगे? अर्थात कुछ कर ही नहीं पाएँगे। फलस्वरूप इनसान सुखी रहेगा।
3. इन दिनों समाचार-पत्रों में ऐसे-ऐसे समाचार भरे रहते हैं कि ऐसा लगता है मानो देश में कोई ईमानदार रह ही नहीं गया है। हर किसी को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। काम करने वालों के कामों में दोषों को ढूँढ़ा जाने लगता है, उनके गुणों को भुला दिया जाता है। इस कारण हर आदमी दोषी अधिक दिखता है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं।
4. इस पंक्ति का अभिप्राय यह है कि क्या भारतवर्ष की वह क्षमता समाप्त हो गई है जो आर्य-द्रविड़, हिंदू-मुसलमान, यूरोपीय-भारतीय जैसी सभ्यता संस्कृतियों को अपने में आत्मसात कर लेती थी।
5. आज के माहौल में ईमानदार श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ और फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं।
6. **शीर्षक–**जीवन-मूल्यों में आस्था।

पृष्ठ संख्या–54

गद्यांश-17

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) कथन (A) और कथन (R) दोनों सही हैं। और कारण (R) कथन (A) की पुष्टि करता है।

2. (ग) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. हमारे देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में न कोई छोटा होता है, न बड़ा; न कोई गरीब होता है, न अमीर। देश का संविधान सबके लिए समान है। नागरिक अधिकारों पर सबका समान हक है। यह तंत्र पारिवारिक–सामाजिक सभी स्तरों पर स्त्री–पुरुष को एक नजर से देखता है। अपने अधिकारों का इस्तेमाल करने, अपनी बात बेझिझक कहने का सबको समान अधि कार है।
2. आजादी मिलने के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत नारी जागृति आई है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में विकास हुआ है। ऐसी स्थिति में ऐसी निराशाजनक बातें नहीं करनी चाहिए कि तंत्र ठप्प हो गया है, यह पद्धति असफल हो गई है आदि।
3. लोकतंत्र की सफलता तब सामने आएगी, जब यहाँ का हर नागरिक इतना शिक्षित हो जाएगा कि अपने देश, समाज, परिवार, घर, व्यक्ति सबके प्रति निष्ठा से अपना दायित्व निभाने लगेगा।
4. लोकतंत्र के संदर्भ में सकारात्मक सोच का आशय लोकतंत्र के श्रेष्ठ पहलुओं को सराहना और स्वीकारना है। हम लोकतंत्र की उदारता तथा ग्रहणशीलता के बारे में गहराईपूर्वक सोचें।
5. मानवता का संतुलित और सर्वांगीण विकास लोकतंत्र में ही संभव है।
6. **शीर्षक**–भारत और लोकतंत्र।

पृष्ठ संख्या–55

गद्यांश–18

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख) 5. (घ)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययन तथा यूनीसेफ की रिपोर्ट बताती है कि भारत के बच्चों में कुपोषण व्यापक स्तर पर है। साथ ही बाल मृत्यु–दर और मातृ मृत्यु–दर का ग्राफ काफी ऊँचा है। यूनीसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, लड़कियों की दशा तो और भी खराब है। बालिग होने से पहले ब्याह देने

के मामले में दक्षिण एशिया में पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के बाद भारत का नंबर आता है।

2. मातृ मृत्यु-दर तथा बाल मृत्यु-दर का प्रमुख कारण बालिग होने से पहले लड़कियों का ब्याह कर देना है। इस स्थिति में लड़की शारीरिक तथा मानसिक रूप से संतान-उत्पत्ति के लिए तैयार नहीं होती है। इसलिए मातृ तथा बाल मृत्यु-दर बढ़ जाती है।
3. देश में हर साल लाखों बच्चे गुम हो जाते हैं। लाखों बच्चे स्कूल भी नहीं जाते। बाल-श्रमिकों की संख्या स्कूल न जा पाने वाले बच्चों से भी अधिक है। ऐसे बच्चों का बड़े पैमाने पर शोषण होता है। ऐसे बच्चे प्राय: पिटाई तथा हिंसा के शिकार होते हैं। ये सब बातें विचलित कर देने वाली हैं।
4. कमजोर तबकों के बच्चों के प्रति बाकी समाज का रवैया अमूमन असहिष्णुता का रहता है। इस प्रकार का अमानवीय दृष्टिकोण बिलकुल भी न्यायसंगत नहीं हो सकता और मैं इससे बिलकुल भी सहमत नहीं हूँ।
5. बच्चों के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता बहुत क्षीण है।
6. **निपात** – भी

पृष्ठ संख्या–56

गद्यांश-19

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (घ)
3. (क) 4. (क)
5. (क) कथन (i), (ii) और (iv) सही हैं।

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. जीवन में शिक्षा की बहुविध उपयोगिता है। यह जीवन में सफलता पाने का महत्वपूर्ण उपकरण है। यह जीवन के कठिन समय में चुनौतियों का सामना करना सिखाती है। शिक्षण-प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए गए ज्ञान से आत्मनिर्भरता आती है। इसके द्वारा जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के अवसर प्राप्त होते हैं।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा बहुत से जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, ताकि सभी व्यक्तियों में समानता

की भावना लाई जा सके तथा देश को विकास के पथ पर आगे ले जाया जा सके।

3. किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय से दूर रहकर भी पत्राचार के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने को दूरस्थ शिक्षा कहा जाता है। इसके माध्यम से नौकरी करते हुए भी पढ़ाई की जा सकती है। साथ ही किसी भी मनचाहे विश्वविद्यालय में बहुत आसानी से और कम शुल्क में प्रवेश लिया जा सकता है। ये दूरस्थ शिक्षा के कुछ प्रमुख लाभ हैं।
4. कौशल पाठ्यक्रमों द्वारा व्यक्ति अल्प-अवधि में विभिन्न कौशलों का विकास कर लेता है तथा इनमें दक्षता प्राप्त कर कम समय में ही अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। छोटे-छोटे संस्थान विभिन्न कौशलों को विकसित करने हेतु लघु अवधीय कौशल पाठ्यक्रम चला रहे हैं।
5. कौशलपरक पाठ्यक्रमों में दक्षता प्राप्त कर व्यक्ति कम समय में ही अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।
6. **शीर्षक–** भारत में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम।

पृष्ठ संख्या–57

गद्यांश-20

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की शुरुआत 25 सितंबर, 2014 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में की गई ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया जा सके एवं उसे सुदृढ़ किया जा सके।
2. 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम देश के युवाओं के लिए रोजगार का रास्ता खोलता है। इससे भारत में निश्चित ही गरीबी के स्तर को घटाने में मदद मिलेगी तथा दूसरी सामाजिक समस्याएँ भी कम होंगी।
3. इस अभियान के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने अन्य देशों के निवेशकों से आह्वान किया कि वे भारत आएँ और यहाँ उत्पादों के निर्माण द्वारा अपना व्यापार बढ़ाएँ। इससे कोई मतलब नहीं कि वे किस देश में अपने उत्पाद बेच रहे हैं, महत्वपूर्ण यह है कि उन्हें भारत में उत्पादन करना चाहिए।

4. 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम निवेशकों को यह अवसर उपलब्ध कराता है कि वे भारत आएँ और उपग्रह से पनडुब्बी, ऑटोमोबाइल से कृषि, विद्युत से इलेक्ट्रॉनिक आदि किसी भी क्षेत्र में निवेश करें और लाभ कमाएँ।
5. 'मेक इन इंडिया' अभियान निवेशकों को उपग्रह से पनडुब्बी, ऑटोमोबाइल से कृषि तथा विद्युत से इलेक्ट्रॉनिक आदि किसी भी क्षेत्र में निवेश करने के लिए प्रेरित करता है।
6. **शीर्षक–** मेक इन इंडिया।

पृष्ठ संख्या–58

गद्यांश–21

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ)

पृष्ठ संख्या–59

गद्यांश–22

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ)

पृष्ठ संख्या–59

गद्यांश–23

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)

पृष्ठ संख्या–60

गद्यांश–24

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ख)

पृष्ठ संख्या–61

गद्यांश–25

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)

❑❑❑